**ओ३म्**

**‘तपोवन आश्रम देहरादून की तपोभूमि में निर्माणाधीन विशाल एवं** **भव्य यज्ञशाला’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

हम विगत लगभग 45 वर्षों से देहरादून के वैदिक साधन आश्रम तपोवन से एक श्रोता के रूप में जुड़े हुए हैं। इस अवधि में इस संस्था से जुड़े अनेक प्रमुख व्यक्तियों से हमारे निकट संबंध एवं खट्टे मीठे अनुभव भी रहे हैं। यहां हमने स्वामी विद्यानन्द विदेह, महात्मा दयानन्द, महात्मा बलदेव जी, स्वामी सत्यपति जी, स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती, स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती, स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती, डा. महेश विद्यालंकार, स्वामी सोम्बुद्धानन्द, आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार, आचार्य आर्यनरेश, आचार्य उमेशचन्द्र कुलश्रेष्ठ, डा. जयेन्द्र आचार्य आदि अनेक विद्वानों को सुना है। इस आश्रम के संस्थापक बावा गुरमुख सिंह जी के दो विश्वासपात्र व्यक्तयों श्री धर्मेन्द्र सिंह आर्य और श्री भोलानाथ जी, सहारनपुर के तो हम अत्यन्त निकट रहे हैं। वर्तमान में आश्रम में धर्माचार्य के रूप में विराजमान आचार्य आशीष दर्शनाचार्य जी से भी हमारा परिचय है। उनको आश्रम में, गुरुकुल पौन्धा देहरादून में और टीवी पर भी सुना करते हैं। यहां होने वाले बहुकुण्डीय यज्ञों में भी हमने विगत 40-45 वर्षों में भाग लिया है। इस अवधि में यहां जितने आर्य भजनोपदेशक आयें हैं, उनके भजनों व गीतों का श्रवण भी हमने किया है। सम्प्रति आश्रम का संचालन इसके यशस्वी प्रधान व दानवीर श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी, दिल्ली और यशस्वी महामंत्री इंजीनियर व दानवीर श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी द्वारा पूरी निष्ठा, समर्पण व सक्रियता से किया जा रहा है। इन दोनों आर्य महानुभावों से भी हमारे मधुर व हार्दिक स्नेहपूर्ण सम्बन्ध हैं। इस आश्रम की मासिक पत्रिका पवमान के मुख्य सम्पादक श्री कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री जी को भी हमें सहयोग करने का सुअवसर प्राप्त हो रहा है। अतः इस आश्रम की प्रगति में हम सहयोग कर पायें या न कर पायें, हमें चिन्ता रहती है कि यह संस्था इसके संस्थापक बावा गुरमुख सिंह और उनके सहयोगी कीर्तिशेष महात्मा आनन्द स्वामी के भावनाओं के अनुरूप खूब प्रगति करें। यहां वर्ष भर साधकों के आने तांता लगा रहे। साधना में सब प्रगति करें और अभ्युदय व निःश्रेयस को प्राप्त हों। यह भी बता दें कि महात्मा आनन्द स्वामी ने समय समय पर यहां अज्ञातवासी होकर साधनायें की हैं। स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती, महात्मा प्रभु आश्रित, महात्मा दयानन्द, स्वामी दिव्यानन्द जी आदि अनेक योग साधकों ने भी यहां रहकर साधना की है।

फरवरी, 2016 माह में स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी के ब्रह्मत्व में तपोवन आश्रम की वनाच्छादित पवर्तीय, शान्त व निर्जन साधना स्थली तपोभूमि में चतुर्वेद पारायण यज्ञ का सफल आयोजन किया गया था। दिल्ली और देश के अनेक भागों से बड़ी संख्या में पधारे साधक व यज्ञ प्रेमियों ने यहां लगभग तीन सप्ताह रहकर चतुर्वेद पारायण यज्ञ को सफल बनाया था। स्वामी चित्तेश्वरानन्द इन आयोजनों में यज्ञ प्रेमी साधकों को कड़े नियमों में रखते हैं। वह मोबाइल फोन का प्रयोग कम से कम या न के बराबर ही कर पाते हैं। अधिकांश समय उनको मौन रहना पड़ता है। बाहर आ जा नहीं सकते। बहुत साधारण भोजन कर सन्तुष्ट रहना पड़ता है। स्वाध्याय सहित अधिक व लम्बे समय तक ध्यान लगाने का अभ्यास भी करना पड़ता है। तब भी लोग प्रसन्नतापूर्वक इन सभी तपस्याओं को करते हुए पूर्ण श्रद्धा से दोनों समय दीर्घावधि तक यज्ञ करते हैं। इस वर्ष इस आयोजन के समय हम टंकारा ऋषि बोधोत्सव में गये हुए थे। वहां से आकर अन्तिम दिन पूर्णाहुति में सम्मिलित हुए थे। इस अवसर पर हमने जो प्रवचन सुने, यज्ञ को होते हुए देखा तथा यहां के अन्य समाचारों से अपने पाठकों को अवगत कराया था। चतुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति के समय स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी और यज्ञप्रेमी साधकों ने यहां एक यज्ञशाला के निर्माण की आवश्यकता अनुभव की थी। इसका प्रस्ताव बना जिसमें स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती और आश्रम के मंत्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी ने एक - एक लाख रुपये दान देने की घोषणायें की थी। बाहर से पधारे और कुछ स्थानीय सहायकों ने भी अपनी ओर से यथाशक्ति दान की घोषणा की थी। इसके बाद यज्ञशाला का मानचित्र दिल्ली के एक योग्य वास्तुविद से तैयार कराया गया। विगत अक्तूबर, 2016 माह के आश्रम के शरदुत्सव में इस यज्ञशाला का शिलान्यास स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी, स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती, श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री जी, श्री प्रेम प्रकाश शर्मा जी आदि के कर कमलों से सम्पन्न किया गया था। अभी मात्र डेढ़ माह ही हुआ है, यह यज्ञशाला लगभग बन कर तैयार है। आज 30 नवम्बर, 2016 को इस निर्माणाधीन यज्ञशाला का लिया गया चित्र आपके अवलोकनार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं। आज लिए चित्रों सहित यज्ञशाला परिसर में उपस्थित होने का हमारा जो अनुभव है, वह चित्र देखकर पाठकों को शायद नहीं हो सकेगा। हम आशा करेंगे की आगामी मई, 2017 के ग्रीष्मोत्सव व अन्य किसी अवसर पर यहां आयोजित किसी वृहत यज्ञ में आप भाग लेकर स्वयं उस आनन्द का अनुभव करें जिसका अनुभव हमने आज किया व भावी आयोजन में होने की आशा है। हम यह भी बता दें कि निर्माणाधीन यज्ञशाला की लम्बाई व चैड़ाई 50 x 50 फीट है। ऊंचाई 25 फीट है। यज्ञशाला में पांच यज्ञकुण्ड बनाये जा रहे हैं। एक मध्य में और चार उत्तर-पूर्व, दक्षिण-पूर्व, पश्चिम-दक्षिण और उत्तर-पश्चिम दिशाओं में होंगे। पूर्व दिशा में विद्वानों के प्रवचनों के लिए एक वेदी वा मंच भी बनाया जा रहा है। यज्ञशाला चारों दिशाओं से खुली हुई है। बीच में कोई बड़ा स्तम्भ आदि नहीं है जिससे श्रोताओं को ब्रह्मा जी, वेदपाठी, प्रवचनकर्ता विद्वान या भजनोपदेशकों को सीधा देखने में कोई असुविधा हो।

 हम यह भी बता दें कि आज हम आश्रम के मंत्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा, पवमान मासिक पत्रिका के सम्पादक वैदिक विद्वान, संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेजी-उर्दू के जानकार श्री कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री के साथ तपोवन आश्रम से चार किमी. दूर वनाच्छादित पर्वतीय तपोभूमि में भ्रमण व यज्ञशाला का अवलोकन करने गये। मंत्री जी ने बताया कि आश्रम की लगभग 70 वर्ष पहले भूमि की जो रजिस्ट्री कराई गई थी वह 590 बीघा भूमि थी। अब वर्तमान में न्यास के पास मात्र लगभग 125 बीघा भूमि ही है। ऐसा पूर्व के कुछ अधिकारियों के कारण हुआ है। हमने भी मंत्री जी को सम्पत्ति विभाग से खरीदी गई भूमि का नक्शा प्राप्त कर न्यास की भूमि को चिन्हित करने का सुझाव दिया। इस आश्रम के न्यासी श्री महेन्द्र सिंह चैहान भूमि विषयक इस कार्य को देख रहे हैं, उनसे मिल कर भी हम इसकी चर्चा करेंगे। मत्री श्री शर्मा जी ने हमें बताया कि आश्रम व तपोभूमि के चार किमी. की दूरी में वनों का भी बहुत बड़ा भाग आश्रम का है जिसे चिन्हित कराया जाना है। सरकार ने यहां जो सड़क बनाई है उसमें भी आश्रम की भूमि का अधिकांश भाग सम्मिलित है। आश्रम एक गोशाला का संचालन भी करता है जो आश्रम व तपोभूमि के मार्ग में लगभग बीच में स्थित है। इस गोशाला में अच्छी नस्ल की अनेक गायें हैं। आश्रम तपोवन विद्या निकेतन के नाम से एक जूनियर हाईस्कूल का संचालन भी करता है जिसमें लगभग 300 बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। इस विद्यालय की प्रधानाचार्य श्रीमती उषा नेगी जी अध्यापिकाओं की अपनी टीम के साथ मिलकर बच्चों को वेद और आर्यसमाज के बहुत अच्छे संस्कार दे रहीं हैं जिसके हम साक्षी हैं। स्कूल में सन्ध्या एवं हवन भी होता है। अब यह नियमित हुआ करेगा। इसके साथ बच्चों को प्रतिदिन आर्य सिद्धान्तों व महापुरुषों के कार्यों से भी परिचित कराया जायेगा। इसके लिये आश्रम ने एक अनुभवी आर्य विद्वान श्री सूरत राम शर्मा को नियुक्त किया है। स्कूल की प्रधानाचार्या श्रीमती उषा नेगी, श्री प्रेमप्रकाश शर्मा और श्री कृष्णकान्त वैदिक जी का एक सामूहिक चित्र भी हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

हम सभी जानते हैं कि विशाल एवं भव्य यज्ञशाला के निर्माण में अधिकारियों के श्रम सहित प्रभूत धन भी व्यय होता है। यज्ञशाला पर अभी तक लगभग रू. 7.50 लाख की धनराशि व्यय हो चुकी है। अब फर्श का कार्य व यज्ञाशाला के परिसर व परिवेश को स्वच्छ एवं सुन्दर बनाने का कार्य शेष है जो बहुत शीघ्र ही पूरा हो जायेगा। इस कार्य में लगभग 2.50 लाख रूपये व्यय होने का अनुमान है। इस कार्य के लिए आश्रम को दान के रूप में सहयोगी ऋषि भक्तों व यज्ञ प्रेमियों के सहयोग की आवश्यकता है। आप जितना कम व अधिक सहयोग कर सकते हैं, आश्रम को देने का कष्ट करें। इसके लिए आश्रम के मंत्री श्री प्रेमप्रकाश शर्मा से दूरभाष संख्या 09412051586 पर सम्पर्क कर सकते हैं। आश्रम की वेबसाइट [www.vaidicsadanashram88@gmail.com](http://www.vaidicsadanashram88@gmail.com) है। नैट व आनलाइन बैकिंग से सहायता व दान देने के लिए बैंक खाते का नाम - वैदिक साधन आश्रम, बैंक - कैनरा बैंक, क्लॉक टावर ब्रांच, देहरादून, बैंक खाता संख्या - **2162101001530 rFkk** तथा IFSC कोड **CNRB 0002162** है। यज्ञ करने में पुण्य होता है यह तो हम सब जानते हैं। यदि आप इस पुण्य कार्य में सहयोग करते हैं तो कुछ न कुछ पुण्य तो आपको इसमें अवश्य होगा। यहां जो यज्ञ हुआ करेगा उसके पुण्य में आप भी भागी हो सकते हैं। अतः उदारता से विचार कर अपनी भावनाओं को क्रियात्मक रूप देने का कष्ट करें। यह हमारा आपसे अनुरोध है। हम आशा करते हैं कि आप आश्रम के आगामी मई, 2017 के ग्रीष्मोत्सव में आकर इस यज्ञशाला में बैठकर यज्ञ का आनन्द लेंगे। इसी के साथ इस लेख को विराम देते हैं।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

**ओ३म्**

**‘ईश्वर को जानकर ही सब मनुष्य सुखी होते हैः ऋषि दयानन्द’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

मनुष्य के सुख का कारण क्या है? इस प्रश्न का उत्तर महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास में ऋग्वेद के एक मन्त्र संख्या 1/164/39 सहित अन्य चार मन्त्रों को प्रस्तुत कर दिया है। प्रथम मन्त्र है **‘ऋचो अक्षरे परमे व्योमन्यस्मिन्देवा अधि विश्वे निषेदुः। यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति य इत्तद्विदुस्त इमे समासते।।’** इस मंन्त्र का अर्थ करते हुए ऋषि दयानन्द जी कहते हैं कि ईश्वर सब दिव्य गुण, कर्म, स्वभाव व विद्या से युक्त है और उसी में पृथिवी व सूर्यादि लोक स्थित हैं। ईश्वर आकाश के समान व्यापक है, वह सब देवों का देव अर्थात् महादेव है। उस परमेश्वर को जो मनुष्य न जानते न मानते और उस का ध्यान नहीं करते वे नास्तिक मन्दमति लोग सदा दुःखसागर में डूबे ही रहते हैं। इसलिए सर्वदा उस ईश्वर को जानकर सब मनुष्य सुखी होते हैं। यहां ऋषि दयानन्द जी ने ईश्वर को सब दिव्य गुणों व विद्या से युक्त बताया है और कहा कि पृथिवी व सूर्य आदि आकाशस्थ सभी लोक लोकान्तर उसी में स्थित हैं अर्थात् उसी ने समस्त ब्रह्माण्ड को धारण कर रखा है। ईश्वर कोई एकदेशी व मनुष्य की जीवात्मा के समान एक स्थान में सीमित सत्ता नहीं है अपितु वह आकाश के समान सर्वत्र व्यापक अर्थात् सर्वव्यापक है। संसार में अन्न, जल, पृथिवी, अग्नि, वायु, आकाश, समस्त विद्वान आदि जितने भी देवता हैं, ईश्वर उन सब देवों का भी देव है। इसका एक अर्थ यह भी है कि इन भौतिक देवों में जो शक्ति व सामथ्र्य है, वह इन्हें सब ईश्वर प्रदत्त है। इन गुणों से युक्त परमेश्वर को जो मनुष्य जानते और मानते नहीं हैं वह सब मन्दमति और नास्तिक हैं। ऐसे अज्ञानी लोग दुःसागर में डूब रहते हैं और जो ईश्वर के सच्चे स्वरूप को जानता है वह उस सत्य ज्ञान से सुख को प्राप्त होता है। अतः सुख की प्राप्ति के लिए ईश्वर के सच्चे स्वरूप का ज्ञान व तदनुसार उसका स्तुति, प्रार्थना व उपासना से सत्कार करना आवश्यक है, यही सुख का आधार व कारण है।

इसके बाद ऋषि ने कुछ प्रश्नोत्तर प्रस्तुत कर शंका समाधान किया है जिसके बाद अन्य वेद मन्त्रों के अर्थों पर प्रकाश डाला है। ऋषि दयानन्द जी ने जो दो प्रश्न दिये हैं वह हैं (1) वेद में ईश्वर अनेक हैं इस बात को तुम मानते हो या नहीं? व (2) वेदों में जो अनेक देवता लिखे हैं उस का क्या अभिप्राय है। प्रथम प्रश्न का उत्तर देते हुए वह कहते हैं कि वह अनेक ईश्वर नहीं मानते क्योंकि चारों वेदों में ऐसा कहीं नही लिखा जिससे अनेक ईश्वर सिद्ध हों किन्तु यह तो लिखा है कि ईश्वर एक है। दूसरे प्रश्न का उत्तर देते हुए वह बताते हैं कि देवता दिव्य गुणों से युक्त होने के कारण कहलाते हैं। जैसी कि पृथिवी, परन्तु इस को कहीं ईश्वर या उपासनीय नहीं माना है। देखो ! इसी मन्त्र में कि **‘जिस में सब देवता स्थित हैं, वह जानने और उपासना करने योग्य ईश्वर है।’** यह उनकी भूल है जो देवता शब्द से ईश्वर का ग्रहण करते हैं। परमेश्वर देवों का देव होने से महादेव इसीलिये कहाता है कि वही सब जगत् की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलयकत्र्ता, न्यायाधीश और अधिष्ठाता है।

इसके आगे ऋषि दयानन्द कहते हैं कि जो **‘त्रयस्ंत्रिशत्ंत्रिशता0’** इत्यादि वेदों में प्रमाण हैं इस की व्याख्या शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थ में की है कि तेंतीस देव अर्थात् पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, चन्द्रमा, सूर्य, और नक्षत्र सब सृष्टि के निवास स्थान होने से यह आठ वसु हैं। प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त, धनंजय और जीवात्मा, यह ग्यारह रुद्र इसलिये कहाते हैं कि जब शरीर को छोड़ते हैं तब रोदन कराने अर्थात् रुलाने वाले होते हैं। संवत्सर के बारह महीने बारह आदित्य इसलिये हैं कि ये सब की आयु को लेते जाते हैं। बिजली का नाम इन्द्र इस हेतु से है कि परम ऐश्वर्य का हेतु है। यज्ञ को प्रजापति कहने का कारण यह है कि जिस से वायु वृष्टि जल ओषधी की शुद्धि, विद्वानों का सत्कार और नाना प्रकार की शिल्पविद्या से प्रजा का पालन होता है। यह तैंतीस पदार्थ पूर्वाक्त गुणों के योग से देव कहाते हैं। इनका स्वामी और सब से बड़ा हाने से परमात्मा चैतींसवां उपास्यदेव शतपथ ब्राह्मण के चैदहवें काण्ड में स्पष्ट लिखा है। इसी प्रकार अन्यत्र भी लिखा है। जो लोग वेदों में अनेक देवों का होना मानते हैं वह यदि वेद और शतपथ ब्राह्मण आदि शास्त्रों को देखते तो वेदों में अनेक ईश्वर माननेरूप भ्रमजाल में गिरकर क्यों बहकते।

इसके बाद चार और मन्त्रों का भाव प्रस्तुत करते हुए ऋषि दयानन्द ने लिखा है कि हे मनुष्य ! जो कुछ इस संसार में जगत् है उस सब में व्याप्त होकर जो नियन्ता (सबको नियम में रखने वाला व जीवों को उनके कर्मानुसार फल देनेवाला) है वह ईश्वर कहलाता है। उस से डर कर हे मनुष्यों ! तुम अन्याय से किसी के धन की आकांक्षा मत करो। उस अन्याय के त्याग और न्यायाचरण रूप धर्म के पालन से अपनी आत्मा से सर्वाधिक सुख अर्थात् आनन्द का भोग करो। इसके आगे वह कहते हैं कि ईश्वर सब को उपदेश करता है कि हे मनुष्या ! मैं ईश्वर सब के पूर्व विद्यमान सब जगत् का स्वामी हूं। मैं सनातन जगत्कारण और सब धनों का विजय करनेवाला और दाता हूं। मुझ ही को सब जीव जैसे पिता को सन्तान पुकारते हैं, वैसे पुकारें। मैं सब को सुख देने हारे जगत् के लिये नाना प्रकार के भोजनों का विभाग पालन करने के लिये करता हूं। परमेश्वर वेद द्वारा शिक्षा करते हुए कहते हैं कि मैं परमैश्वर्यवान्, सूर्य सदृश सब जगत् का प्रकाशक हूं। कभी पराजय को प्राप्त नहीं होता और न कभी मृत्यु को प्राप्त होता हूं। मैं ही जगत् रूप धन का निर्माता हूं। सब जगत् की उत्पत्ति करने वाला मुझ ही को जानो। हे जीवों ! ऐश्वर्य प्राप्ति के यत्न करते हुए तुम लोग विज्ञानादि धन को मुझ से मांगो और तुम लोग मेरी मित्रता से अलग मत होओ। वेदों में ईश्वर मनुष्यों को उपदेश करते हुए यह भी कहते हैं कि हे मनुष्यों ! मैं सत्यभाषणरूप स्तुति करनेवाले मनुष्य को सनातन ज्ञानादि धन को देता हूं। मैं ब्रह्म अर्थात् वेद का प्रकाश करनेहारा और मुझ को वह वेद यथावत् कहता, उस से सब के ज्ञान को मैं बढा़ता, मैं सत्पुरुषों का प्रेरक, यज्ञ करनेहारे को फलप्रदाता और इस विश्व में जो कुछ है, उस सब कार्य का बनाने और धारण करने वाला हूं। इसलिये तुम लोग मुझ को छोड़ किसी दूसरे को मेरे स्थान म मत पूजो, मत मानो और मत जानो।

महर्षि दयानन्द ने वेद मन्त्रों के आधार पर उपर्युक्त जो व्याख्यान दिया है वह यथार्थ एवं व्यवहारिक है। ईश्वर को जानने, मानने व उसकी उपासना से जो सुख मिलता है वह स्थाई सुख होता है जिसका परिणाम जन्म व मरण के चक्र से मुक्ति का मिलना और उसके बाद लम्बी अवधि तक ईश्वर के सान्निध्य में रहकर आन्नद का भोगना होता है। ईश्वर को न मानने व न जानने वालो वास्तविक सुखों से वंचित रहते हैं। भौतिक पदार्थों को प्राप्त कर उनसे जो सुख प्राप्त किया जाता है वह क्षणिक व सीमित होने के साथ परिणाम में दुख देने वाला होता है। धन बड़ी कठिनाई से कमाया जाता है। यदि वह चोरी हो जाये तो कष्ट होता है। कई बार धन के कारण लोग धनिकों की हत्या व उनके बच्चों का अपहरण जैसे कार्य भी कर देते हैं जो परिणाम में दुःखदायी ही होते हैं। स्वादिष्ट भेाजन करने का सुख जब तक वह जिह्वा के सम्पर्क में होता है, तभी तक होता है। उससे पृथक होते ही वह सुख समाप्त हो जाता है। कई बार कुछ विशेष भोजन ही रोग का कारण बन कर दुःखदायी हो जाते हैं। अतः स्थाई सुख के लिए मनुष्यों को वैदिक शिक्षा के अनुसार ईश्वर के यथार्थ स्वरूप को जानने का प्रयास करना चाहिये और उसे जानकर वेद व योगाभ्यास से ध्यान विधि से उपासना कर स्थाई आनन्द प्राप्त करना चाहिये। हम आशा करते हैं कि पाठक सुख की उपलब्धि का प्रमुख स्रोत ईश्वर का ज्ञान व उपासना को जानकर जीवन में सुख का लाभ करेंगे। इसी के साथ इस लेख को विराम देते हैं। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**